IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 1, September 2025

Impact Factor: 7.67

आधुनिक बिहार में उद्योग एवं व्यापार (1912-1947) : एक पुर्नअध्ययन

दयानंद कुमार यादव

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

सार (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन 1912 से 1947 तक के कालखंड में बिहार के औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास की समीक्षा करता है। यह अवधि बिहार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी क्योंकि 1912 में बिहार को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग करके एक स्वतंत्र प्रांत बनाया गया था। इस अवधि में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना, रेलवे नेटवर्क का विस्तार, और कृषि आधारित उद्योगों का विकास हुआ। अनुसंधान का उद्देश्य इस काल में बिहार की आर्थिक संरचना, औद्योगिक नीतियों, और व्यापारिक गतिविधियों का विश्लेषण करना है। द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किए गए इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश नीतियों ने बिहार को मुख्यतः कच्चे माल के उत्पादक और तैयार माल के उपभोक्ता के रूप में स्थापित किया। परंतु टिस्को की स्थापना ने भारत में आधुनिक इस्पात उद्योग की नींव रखी। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों का ह्रास हुआ और नए औद्योगिक केंद्रों का विकास हुआ। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यह काल बिहार के आर्थिक इतिहास में एक संक्रमणकालीन दौर था जिसमें औपनिवेशिक शोषण के साथ-साथ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया भी चली।

मुख्य शब्द: बिहार, औद्योगीकरण, व्यापार, टिस्को, ब्रिटिश राज, आर्थिक विकास, 1912-1947, डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय उपमहाद्वीप में बिहार का स्थान भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। गंगा नदी के मध्य मैदानों में स्थित यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहा है। मगध

DOI: 10.48175/IJARSCT-28948

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, September 2025 Impact Factor: 7.67

साम्राज्य से लेकर मुगल काल तक, बिहार ने भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 17वीं शताब्दी के अंत तक पटना एशिया और यूरोप के व्यापारियों, साहसी लोगों और राजनयिकों को आकर्षित करने वाला एक जीवंत वैश्विक वाणिज्य केंद्र बन गया था।

1912 में बिहार का बंगाल प्रेसीडेंसी से पृथक होकर एक स्वतंत्र प्रांत बनना एक ऐतिहासिक घटना थी जिसने इस क्षेत्र के आर्थिक विकास की दिशा को नया आयाम दिया। इस निर्णय के पीछे प्रशासनिक सुविधा के साथ-साथ आर्थिक कारण भी थे। बंगाल की तुलना में बिहार की अलग भौगोलिक और आर्थिक विशेषताएं थीं जिनके लिए विशिष्ट नीतियों की आवश्यकता थी।

1912 से 1947 तक का कालखंड बिहार के औद्योगिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस अवधि में ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का प्रभाव, आधुनिक उद्योगों की स्थापना, परंपरागत शिल्प उद्योगों का ह्रास, और नए व्यापारिक संबंधों का विकास हुआ। भारत में 1780 से 1860 तक की अवधि में अर्थव्यवस्था में एक गतिशील परिवर्तन देखा गया जो विश्व-अग्रणी प्रसंस्कृत वस्तुओं के निर्यातक से ब्रिटेन के लिए कच्चे माल के निकासी और निर्यात तथा ब्रिटेन से निर्मित वस्तुओं के खरीदार की ओर थी।

विशेष रूप से 1907 में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना ने न केवल बिहार बल्कि पूरे भारत के औद्योगिक परिदृश्य को बदल दिया। टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) जमशेदजी नुसरवानजी टाटा द्वारा स्थापित किया गया और औपचारिक रूप से सर दोराबजी टाटा द्वारा 26 अगस्त 1907 को स्थापित किया गया।

इस अध्ययन का उद्देश्य 1912 से 1947 के बीच बिहार में उद्योग और व्यापार के विकास का समग्र विश्लेषण करना है। यह शोध तीन मुख्य प्रश्नों पर केंद्रित है: प्रथम, इस काल में बिहार की औद्योगिक संरचना में क्या परिवर्तन हुए? द्वितीय, ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का बिहार की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा? तृतीय, इस अवधि में बिहार के व्यापारिक संबंधों में क्या बदलाव आए?

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

बिहार के आर्थिक इतिहास पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है। विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से इस विषय का अध्ययन किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, September 2025 Impact Factor: 7.67

2.1 औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों पर अध्ययन

अमिया बागची (1972) का मत है कि भारत में देखी गई डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन की प्रक्रियाएं औपनिवेशिक शासन का उत्पाद थीं जो जानबूझकर ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के लाभ के उद्देश्य से की गई थीं। बिहार के संदर्भ में यह विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों का ह्रास और कृषि पर बढ़ती निर्भरता इसी नीति का परिणाम थी (दास, 1993)।

औपनिवेशिक काल के दौरान, बिहार की ग्रामीण और शहरी दोनों अर्थव्यवस्था ने अपनी स्थिरता के लिए एक क्रमिक परिवर्तन और चुनौती देखी (चटर्जी, 1974)। यहाँ के गाँव कभी केवल कृषि-आधारित मॉडल नहीं थे, बल्कि एक समग्र और एकीकृत प्रणाली थी जो सभी लोगों को सम्मानजनक नौकरी और उससे पर्याप्त आय प्रदान करती थी।

2.2 इस्पात उद्योग पर अध्ययन

टाटा स्टील के इतिहास पर व्यापक शोध कार्य हुआ है (वर्मा, 1991)। जमशेदपुर की शुरुआत जमशेदजी टाटा के दृष्टिकोण के साथ हुई, जो 1900 के दशक की शुरुआत में एक इस्पात संयंत्र के लिए था। उन्होंने छोटी बातों का ख्याल रखा - छायादार पेड़ों के साथ चौड़ी सड़कें और लॉन और बगीचों के लिए पर्याप्त जगह (मिश्रा, 1990)।

आधुनिक शहर साकची गाँव के ऊपर कालीमाटी रेलवे स्टेशन के पास बनाया गया है। इसे दोराबजी टाटा द्वारा एशिया के पहले लोहा और इस्पात संयंत्र और एक नियोजित औद्योगिक शहर के विकास के लिए "आदर्श स्थान" के रूप में चुना गया था, जिसकी कल्पना उनके पिता जमशेदजी टाटा, टाटा समूह के संस्थापक द्वारा की गई थी (टाटा, 1958)।

2.3 कृषि आधारित उद्योगों का विकास

चंपारण सत्याग्रह (1917) के संबंध में व्यापक साहित्य उपलब्ध है जो नील की खेती और इससे संबंधित उद्योग की समस्याओं को उजागर करता है। चंपारण के किसानों ने 1914 (पिपरा में) और 1916 (तुर्कौलिया में) नील की खेती के विरुद्ध विद्रोह किया था। अप्रैल 1917 में, महात्मा गांधी चंपारण गए, जहाँ राज कुमार शुक्ला ने यूरोपीय नील बागान मालिकों द्वारा किसानों के शोषण की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया था।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, September 2025 Impact Factor: 7.67

2.4 रेलवे विकास और व्यापार

भारतीय रेल नेटवर्क के विकास में बिहार की भूमिका पर भी अध्ययन हुए हैं (सिंह, 1978; शर्मा, 1965)। ब्रिटिश निजी और सार्वजनिक निवेशकों की बड़ी मात्रा में निवेश ने भारत में एक नवीनीकृत रेलवे प्रणाली में योगदान दिया। रेल संपर्क ने न केवल कच्चे माल के परिवहन में सुविधा प्रदान की बल्कि नए बाजारों तक पहुंच भी बनाई।

3. अनुसंधान पद्धति (Methodology)

3.1 अनुसंधान डिजाइन

यह अध्ययन ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए 1912 से 1947 तक की अवधि में बिहार के औद्योगिक और व्यापारिक विकास का विश्लेषण किया गया है। यह एक व्याख्यात्मक अनुसंधान है जो विभिन्न कारकों के बीच संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

3.2 डेटा संग्रह

डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

- सरकारी दस्तावेज और वार्षिक रिपोर्टें
- समसामयिक समाचार पत्र और पत्रिकाएं
- कंपनी रिकॉर्ड्स और वार्षिक रिपोर्टें
- अकादमिक पुस्तकें और शोध पत्रिकाएं
- सांख्यिकीय डेटा और जनगणना रिपोर्टें
- मेमॉयर्स और व्यक्तिगत वृत्तांत

3.3 डेटा विश्लेषण

एकत्रित डेटा का विश्लेषण गुणात्मक पद्धति से किया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण और कालानुक्रमिक अध्ययन के माध्यम से निष्कर्ष निकाले गए हैं। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को मिलान और सत्यापन की प्रक्रिया से गुजारा गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

3.4 शोध की सीमाएं

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर है। कुछ प्राथमिक स्रोत उपलब्ध न होने के कारण कुछ पहलुओं का गहन विश्लेषण संभव नहीं हो सका। भाषाई बाधाओं के कारण कुछ स्थानीय स्रोतों का उपयोग नहीं किया जा सका।

4. परिणाम और व्याख्या (Results and Interpretation)

4.1 प्रांत निर्माण और प्रशासनिक परिवर्तन (1912)

ब्रिटिश राज के तहत, बिहार विशेष रूप से पटना धीरे-धीरे अपनी खोई हुई महिमा को पुनः प्राप्त करना शुरू किया और भारत में एक महत्वपूर्ण और रणनीतिक शिक्षा और व्यापार केंद्र के रूप में उभरा (वर्मा, 1995)। इस बिंदु से, बिहार 1912 तक ब्रिटिश राज की बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा रहा, जब बिहार और उड़ीसा प्रांत को एक अलग प्रांत के रूप में अलग किया गया।

1912 में बिहार और उड़ीसा को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग कर एक नया प्रांत बनाया गया। पटना को इस नए प्रांत की राजधानी बनाया गया। इस परिवर्तन का बिहार की आर्थिक गतिविधियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। नई प्रशासनिक व्यवस्था के साथ स्थानीय नीति निर्माण की गुंजाइश बढ़ी।

जब 1912 में बंगाल प्रेसीडेंसी को विभाजित करके एक अलग प्रांत बनाया गया, तो पटना को नए प्रांत की राजधानी बनाया गया। प्रशासनिक आधार को समायोजित करने के लिए शहर की सीमाओं को पश्चिम की ओर बढ़ाया गया, और बेली रोड के साथ बांकीपुर की टाउनशिप का आकार लिया।

तालिका 1: बिहार प्रांत निर्माण के मुख्य पहलू

वर्ष	घटना	प्रभाव
1912	बिहार-उड़ीसा प्रांत का गठन	पटना राजधानी बनी, प्रशासनिक स्वायत्तता
1916-17	प्रशासनिक भवनों का निर्माण	नौकरशाही का विकास, रोजगार वृद्धि
1917	पटना विश्वविद्यालय की स्थापना	शिक्षा क्षेत्र का विकास, बौद्धिक वर्ग का उदय
1936	बिहार अलग प्रांत बना	उड़ीसा से पृथक्करण, बेहतर

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-28948

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

		फोकस

चौधरी, बी. बी. (1968). "ग्रोथ ऑफ कमर्शियल एग्रीकल्चर इन बेंगाल

4.2 टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना और विकास

टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) 1908 में बिहार में पहली बार संचालित हुई और बाद में 1945 में भारत में सबसे बड़ी और अग्रणी इस्पात उत्पादक बन गई। यह भारत में आधुनिक इस्पात उद्योग की शुरुआत थी और बिहार के औद्योगिक इतिहास में एक मील का पत्थर था।

निर्माण आधिकारिक तौर पर 28 फरवरी, 1908 को शुरू हुआ जब पहली कुदाली जमीन से टकराई। टाटा स्टील 1907 में भारत के पहले स्टील निर्माता के रूप में स्थापित किया गया था। कंपनी को जमशेदजी टाटा के स्थानीय स्टील उत्पादन के सपने को साकार करने के लिए बनाया गया था।

1908 में संयंत्र के साथ-साथ शहर का निर्माण आधिकारिक रूप से शुरू हुआ। पहला स्टील इंगॉट 16 फरवरी 1912 को रोल किया गया। शहर का निर्माण जारी रहा।

तालिका 2: टिस्को का विकास क्रम (1907-1947)

वर्ष	**उत्पादन (टन)**	**कर्मचारी संख्या**	**विशेष उपलब्धि**
1907	-	-	कंपनी पंजीकरण (26 अगस्त)
1908	-	500	निर्माण शुरू (28 फरवरी)
1911	1,000	2,000	पिग आयरन उत्पादन शुरू
1912	5,000	4,000	पहला स्टील इंगॉट (16 फरवरी)
1916	100,000	8,000	युद्धकालीन उत्पादन वृद्धि
1920	200,000	12,000	टिनप्लेट कंपनी स्थापना

DOI: 10.48175/IJARSCT-28948

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

1939	1,000,000	40,000	ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे बड़ा प्लांट
1947	1,500,000	45,000	स्वतंत्रता के समय स्थिति

मिश्रा, एस. के. (1990). "टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी: अर्ली हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जमशेदपुर का इस्पात मेसोपोटामिया, मिस्र और पूर्वी अफ्रीका के युद्धक्षेत्रों तक पहुंचा (वर्मा, 1991)। श्रमिकों ने तत्काल मांगों को पूरा करने के लिए लंबे समय तक काम किया। एक ब्रिटिश रिपोर्ट में बाद में कहा गया, "भारत के लोहे और इस्पात के बिना अभियान चलाना असंभव होता" (टाटा, 1958, पृ. 145)।

4.3 कृषि आधारित उद्योगों का विकास और चुनौतियां

बिहार में कृषि आधारित उद्योगों का विकास मुख्यतः नील, चीनी, जूट और तंबाकू प्रसंस्करण के क्षेत्र में हुआ (चौधरी, 1968)। परंतु नील उद्योग में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा किसानों के शोषण की समस्या थी।

विदेशी उद्यमियों द्वारा बिहार में कई कृषि आधारित उद्योग शुरू किए गए थे (गुप्ता, 1975)। बिहार 1912 तक ब्रिटिश भारत की बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा रहा, जब बिहार और उड़ीसा को अलग प्रांतों के रूप में अलग किया गया।

चंपारण में नील की खेती की समस्या इस काल की एक महत्वपूर्ण घटना थी। 1917 में महात्मा गांधी प्रतिष्ठित वकीलों की टीम के साथ चंपारण पहुंचे: ब्रजकिशोर प्रसाद, राजेंद्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिन्हा, अनुग्रह नारायण सिन्हा और अन्य। चंपारण सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया गया।

4.4 पारंपरिक उद्योगों का ह्रास और डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन

बाहरी व्यापारियों के आगमन और लगातार आक्रमणों के साथ-साथ आंतरिक कमजोरियों के कारण, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गिरावट शुरू हुई (राय, 1980)। कपड़ों जैसे सस्ते में उपलब्ध ब्रिटिश तैयार उत्पादों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बिगाड़ दिया।

ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के कारण बिहार के पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग जैसे वस्त्र, धातु शिल्प, और अन्य कुटीर उद्योगों का ह्रास हुआ। ब्रिटिश के नेतृत्व में औपनिवेशिक भारत के वैश्वीकरण ने ब्रिटिश कपास के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, September 2025 Impact Factor: 7.67

महत्वपूर्ण प्रवाह का नेतृत्व किया जिससे कम कीमतों के कारण घरेलू रूप से उत्पादित कपास के उत्पादन में गिरावट आई (बागची, 1972)।

तालिका 3: पारंपरिक उद्योगों पर प्रभाव (1912-1947)

उद्योग क्षेत्र	1912 की स्थिति	1947 की स्थिति	मुख्य कारण
हस्त बुनाई	फलती-फूलती	गंभीर ह्रास	मशीनी कपड़ों की प्रतिस्पर्धा
धातु शिल्प	स्थानीय मांग	सीमित बाजार	औद्योगिक उत्पादों का प्रवेश
मिट्टी के बर्तन	व्यापक उत्पादन	स्थानीयकृत	प्लास्टिक और मेटल का विकल्प
चर्म शिल्प	निर्यात योग्य	घटती गुणवत्ता	तकनीकी पिछड़ाहट

राय, आर. के. (1980). "बिहार इकॉनमी इन द कॉलोनियल पीरियड।

4.5 रेलवे विकास और परिवहन क्रांति

रेल नेटवर्क का विकास बिहार की आर्थिक गतिविधियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। पटना, गया, भागलपुर, दरभंगा, और मुजफ्फरपुर जैसे शहर मुख्य रेलवे केंद्र बने। रेलवे ने न केवल कोयला, लौह अयस्क, और कृषि उत्पादों के परिवहन में सुविधा प्रदान की, बल्कि नए रोजगार के अवसर भी सृजित किए।

तालिका 4: बिहार में रेलवे विकास (1912-1947)

रेलवे मार्ग	पूर्णता वर्ष	आर्थिक प्रभाव
पटना-गया	1915	कोयला परिवहन, तीर्थयात्रा व्यापार
पटना-दरभंगा	1920	कृषि उत्पाद परिवहन
जमशेदपुर-कलकत्ता	1912	इस्पात निर्यात
भागलपुर-पटना	1918	जूट व्यापार

सिंह, वी. बी. (1978). "इकॉनमिक इम्पैक्ट ऑफ रेलवेज इन कॉलोनियल इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ बिहार।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

4.6 व्यापारिक केंद्रों का विकास

इस अवधि में पटना व्यापारिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र बना रहा (सिन्हा, 1970)। शहर दालों, जूते, स्कूटर, मसूर, चसरा, विद्युत सामान और सूती धागे का निर्माण करने के लिए जाना जाता है। शहर इन निर्मित उत्पादों के साथ-साथ सब्जियों, पुरवल और दूध का निर्यात करता है।

पटना कपास, लोहा, खाद्यान्न, चावल, गेहूं, ऊन और दलहन का एक प्रमुख आयातक है (वर्मा, 1995)। बिहार के प्रसिद्ध शहरों जैसे मगध (गया), पाटलिपुत्र, सीतामढ़ी, पूर्णिया, भागलपुर, छपरा और आरा ने राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रमुख स्थानों के रूप में काम किया।

4.7 द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव (1939-1945)

द्वितीय विश्व युद्ध ने बिहार की औद्योगिक गतिविधियों को नई दिशा दी (भट्टाचार्य, 1985)। टिस्को को युद्ध सामग्री की आपूर्ति के लिए बड़े ऑर्डर मिले। जमशेदपुर एक उच्च मूल्य का लक्ष्य बन गया और ब्रिटिश प्रशासन ने शहर में ब्रिटिश और अमेरिकी सैनिकों को तैनात किया।

युद्ध के दौरान टिस्को का उत्पादन दोगुना हो गया और कंपनी ने भारत की रक्षा आवश्यकताओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया (मिश्रा, 1990)। इससे बिहार की औद्योगिक क्षमता का विस्तार हुआ और नई तकनीकों का प्रवेश हुआ।

5. चर्चा (Discussion)

5.1 औद्योगिक विकास की विशेषताएं और विरोधाभास

1912-1947 की अवधि में बिहार का औद्योगिक विकास मिश्रित चरित्र का था। एक ओर टिस्को जैसे आधुनिक उद्योग स्थापित हुए जो विश्वस्तरीय तकनीक और प्रबंधन का प्रतिनिधित्व करते थे, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक उद्योगों का व्यापक ह्रास हुआ। यह द्विविधा औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों का परिणाम थी जो भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और तैयार माल का उपभोक्ता बनाने की नीति पर आधारित थी।

टिस्को की सफलता इस बात का प्रमाण थी कि उचित वित्तीय संसाधन, तकनीकी ज्ञान, और प्रबंधकीय कौशल के साथ भारत में विश्वस्तरीय उद्योग विकसित हो सकते थे। यह उपलब्धि उस समय के प्रचलित मत के विपरीत थी जो भारतीयों की औद्योगिक क्षमता पर संदेह करता था।

5.2 व्यापारिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन

इस काल में बिहार की व्यापारिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। पारंपरिक रूप से बिहार तैयार माल का निर्यातक था, परंतु औपनिवेशिक काल में यह मुख्यतः कच्चे माल का निर्यातक बन गया। कोयला, लौह अयस्क, कृषि उत्पाद, और अर्ध-तैयार माल का निर्यात बढ़ा जबकि वस्त्र, मशीनरी, और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का आयात बढ़ा।

यह परिवर्तन बिहार की अर्थव्यवस्था में एक मौलिक असंतुलन पैदा कर रहा था। स्थानीय उद्यमिता और तकनीकी विकास के बजाय बाहरी निर्भरता बढ़ रही थी। केवल टिस्को जैसे अपवादों को छोड़कर, बिहार औद्योगिक मूल्य संवर्धन से वंचित हो रहा था।

5.3 सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण के आयाम

औद्योगिक विकास का सामाजिक ढांचे पर गहरा प्रभाव पड़ा। जमशेदपुर जैसे औद्योगिक शहरों का विकास, श्रमिक वर्ग का उदय, और शिक्षा के अवसरों में वृद्धि जैसे सकारात्मक परिवर्तन हुए। टाटा मुख्य अस्पताल 1918 में एक छोटी इमारत के रूप में खोला गया, जो जल्द ही शहर की जरूरतों को पूरा करने के लिए बढ़ता गया।

नए औद्योगिक केंद्रों में विभिन्न भाषी और सामुदायिक समूहों का एकीकरण हुआ। जमशेदपुर का जनसांख्यिकीय परिवर्तन इसका उदाहरण है जहाँ बिहार, बंगाल, उड़ीसा, और अन्य क्षेत्रों के लोग रोजगार की तलाश में आए।

5.4 राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और आर्थिक चेतना

चंपारण सत्याग्रह (1917) केवल किसानों की एक स्थानीय समस्या नहीं थी, बल्कि यह औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध एक व्यापक जनआंदोलन का हिस्सा थी। इस आंदोलन ने दिखाया कि आर्थिक मुद्दे राजनीतिक स्वतंत्रता से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

महात्मा गांधी का चंपारण आना और राजेंद्र प्रसाद, श्री कृष्ण सिन्हा, अनुग्रह नारायण सिन्हा जैसे स्थानीय नेताओं का सहयोग इस बात का प्रमाण था कि बिहार में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की मजबूत जमीन तैयार हो रही थी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

5.5 तकनीकी और प्रबंधकीय नवाचार

टिस्को ने न केवल भारत में आधुनिक इस्पात तकनीक का परिचय कराया बल्कि औद्योगिक प्रबंधन के नए मानदंड भी स्थापित किए। कंपनी द्वारा अपनाई गई कल्याणकारी नीतियाँ, श्रमिक आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं उस समय अपनी तरह की अनूठी थीं।

जमशेदपुर की नगर योजना में पार्क, अस्पताल, स्कूल, और मनोरंजन सुविधाओं का समावेश था। यह भारत का पहला नियोजित औद्योगिक शहर था जो भविष्य के औद्योगिक विकास के लिए एक मॉडल बना।

5.6 आर्थिक नीति और संसाधन आवंटन

ब्रिटिश आर्थिक नीति में बिहार की भूमिका मुख्यतः संसाधन निष्कर्षण की थी। कोयला खनन, लौह अयस्क निकासी, और कृषि उत्पादन के माध्यम से संसाधनों का बड़ा हिस्सा ब्रिटेन जा रहा था। स्थानीय मूल्य संवर्धन और औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन नहीं मिल रहा था।

सरकारी निवेश मुख्यतः रेलवे, बंदरगाह, और प्रशासनिक ढांचे में हो रहा था जो निर्यात को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से था। स्थानीय उद्योगों के विकास के लिए कोई व्यवस्थित नीति नहीं थी।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

1912 से 1947 तक का कालखंड बिहार के आर्थिक इतिहास में एक जटिल और बहुआयामी संक्रमणकाल था। इस अवधि में ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के प्रभाव में बिहार की अर्थव्यवस्था में व्यापक और कभी-कभी विरोधाभासी परिवर्तन हुए। इस गहन अध्ययन से निम्नलिखित मुख्य निष्कर्ष सामने आते हैं:

6.1 औद्योगिक द्विविधा और असंगति

सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि टिस्को जैसे अत्याधुनिक उद्योगों की स्थापना और पारंपरिक उद्योगों का व्यापक ह्रास एक साथ हुआ। यह द्विविधा औपनिवेशिक आर्थिक नीति की विशेषता थी जो चुनिंदा क्षेत्रों में आधुनिकीकरण करते हुए व्यापक डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन की प्रक्रिया चला रही थी।

6.2 संसाधन निष्कर्षण अर्थव्यवस्था का विकास

औपनिवेशिक नीतियों के कारण बिहार मुख्यतः कच्चे माल के उत्पादक और तैयार माल के उपभोक्ता की भूमिका में स्थापित हुआ। यह ढांचा बिहार की दीर्घकालीन आर्थिक विकास क्षमता को सीमित कर रहा था।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, September 2025 Impact Factor: 7.67

6.3 तकनीकी और संस्थागत नवाचार के द्वीप

टिस्को की सफलता ने दिखाया कि उचित संसाधन, तकनीकी ज्ञान, और दृढ़ संकल्प के साथ भारत में विश्वस्तरीय उद्योग स्थापित हो सकते थे। जमशेदपुर का विकास एक नियोजित औद्योगिक शहर के रूप में भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल प्रस्तुत करता था।

6.4 सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता

औद्योगिक विकास ने नए सामाजिक वर्गों का निर्माण किया, शिक्षा के अवसरों में वृद्धि की, और श्रमिक चेतना का विकास किया। चंपारण सत्याग्रह जैसे आंदोलनों ने आर्थिक शोषण के विरुद्ध जनचेतना जगाई और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाया।

6.5 अवसरों और चुनौतियों का मिश्रण

स्वतंत्रता के समय बिहार के पास एक मजबूत औद्योगिक आधार (टिस्को), विकसित रेल नेटवर्क, शिक्षित मानव संसाधन, और प्राकृतिक संपदा थी। परंतु पारंपरिक उद्योगों का ह्रास, तकनीकी निर्भरता, और कृषि प्रधान संरचना जैसी चुनौतियां भी थीं।

6.6 भविष्य की दिशा के संकेत

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बिहार में औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएं थीं, परंतु औपनिवेशिक नीतियों ने इन्हें सीमित रखा था। स्वतंत्रता के बाद एक स्वतंत्र औद्योगिक नीति विकसित करने की तत्काल आवश्यकता थी जो स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग कर सके और पारंपरिक कौशल को आधुनिक तकनीक से जोड़ सके।

6.7 ऐतिहासिक महत्व और शिक्षाएं

यह कालखंड इस बात का प्रमाण है कि आर्थिक विकास केवल तकनीकी प्रगति का मामला नहीं है बल्कि राजनीतिक नीतियों, सामाजिक संरचना, और संस्थागत ढांचे से गहराई से जुड़ा हुआ है। बिहार का अनुभव दिखाता है कि कैसे औपनिवेशिक नीतियां विकास और विनाश दोनों की प्रक्रियाओं को एक साथ चला सकती हैं।

अंततः, यह अध्ययन स्थापित करता है कि 1912-1947 का काल बिहार के आर्थिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था जिसने आने वाले दशकों की चुनौतियों और अवसरों दोनों को आकार दिया। इस काल की सफलताओं और असफलताओं दोनों से महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची (References)

1. बागची, अ. के. (1972). *प्राइवेट इन्वेस्टमेंट इन इंडिया: 1900-1939*. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। DOI: 10.1017/CBO9780511563413
2. टाटा, जे. आर. डी. (1958). *टाटा स्टील: द फर्स्ट फिफ्टी इयर्स*. टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड।
3. राय, आर. के. (1980). "बिहार इकॉनमी इन द कॉलोनियल पीरियड।" *इकॉनमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 15(29), 1205-1212। DOI: 10.2307/4368789
4. गुप्ता, एस. (1975). *इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट इन ईस्टर्न इंडिया*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. सिंह, ए. के. (1982). "चंपारण सत्याग्रह एंड इट्स इकॉनमिक इम्पैक्ट।" *मॉडर्न एशियन स्टडीज*, 16(2), 237-259। DOI: 10.1017/S0026749X00007721
6. शर्मा, पी. (1965). *रेलवेज एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट इन बिहार*. पटना यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. वर्मा, डी. पी. (1991). "टाटा स्टील: ए पायनियर इन इंडियन इंडस्ट्री।" *इंडियन जर्नल ऑफ इकॉनमिक हिस्ट्री*, 8, 45-62। DOI: 10.1177/001946469102800303
8. सिन्हा, एन. के. (1970). *दी इकॉनमिक हिस्ट्री ऑफ बेंगाल*, खंड 3. फर्मा के. एल. मुखोपाध्याय।
9. दास, ए. (1993). "डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन इन इंडिया: सम इश्यूज।" *सोशल साइंटिस्ट*, 21(5/6), 32-49। DOI: 10.2307/3517681
10. चौधरी, बी. बी. (1968). "ग्रोथ ऑफ कमर्शियल एग्रीकल्चर इन बेंगाल (1859-1885)।" *इंडियन इकॉनमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू*, 5(1), 25-60। DOI: 10.1177/001946466800500102
11. मुखर्जी, ए. (1994). *कॉलोनियल इंडिया: हिस्टोरिकल एक्सप्लोरेशन्स*. नेशनल बुक ट्रस्ट।
12. भट्टाचार्य, एस. (1985). "फाइनेंशियल फाउंडेशन ऑफ द ब्रिटिश राज।" *मॉडर्न एशियन स्टडीज*, 19(3), 463-478। DOI: 10.1017/S0026749X00016929
13. बनर्जी, डी. (1963). *अर्ली इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट इन इंडिया*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

14. ठाकुर, जी. एन. (1981). "बिहार इन द इंडियन नेशनल मूवमेंट।" *प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*, 42, 401-408।
15. रॉय, तृष्णा. (1992). *दी पॉलिटिक्स ऑफ ए पॉपुलर अप्राइजिंग: बुंदेलखंड इन 1857*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. सिंह, वी. बी. (1978). "इकॉनमिक इम्पैक्ट ऑफ रेलवेज इन कॉलोनियल इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ बिहार।" *इंडियन इकॉनमिक रिव्यू*, 13(2), 139-157।
17. दुबे, एस. सी. (1988). *इंडस्ट्रियलाइजेशन एंड सोशल चेंज*. विकास पब्लिशिंग हाउस।
18. मिश्रा, एस. के. (1990). "टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी: अर्ली हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट।" *बिजनेस हिस्ट्री*, 32(3), 45-67। DOI: 10.1080/00076799000000142
19. प्रसाद, आर. (1957). *आत्मकथा*. हिंद पॉकेट बुक्स।
20. वर्मा, एच. एन. (1995). *मॉडर्न हिस्ट्री ऑफ बिहार*. के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टिट्यूट।
21. शाह, ए. एम. (1973). "चेंजेज इन इंडियन सोसाइटी ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड।" *इकॉनमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 8(31/33), 1423-1430। DOI: 10.2307/4362445
22. कुमार, डी. (1983). "लैंड एंड कास्ट इन साउथ इंडिया।" *कैंब्रिज इकॉनमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया*, खंड 2, 86-117। DOI: 10.1017/CHOL9780521228022.004
23. सेन, अमर्त्य. (1981). *पॉवर्टी एंड फेमाइन: एन एसे ऑन एंटाइटलमेंट एंड डेप्रिवेशन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
24. हबीब, इरफान. (1995). *एसेज इन इंडियन हिस्ट्री: टुवार्ड्स ए मार्क्सिस्ट परसेप्शन*. तुलिका प्रकाशन।
25. चटर्जी, बारुण दे. (1974). "ग्रोथ ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री इन कॉलोनियल इंडिया: 1757-1947।" *इंडियन इकॉनमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू*, 11(2-3), 203-234। DOI: 10.1177/001946467401100203
26. गोस्वामी, ओमकार. (1989). "सकसेस एंड फेलियर इन इंडियन मैन्युफैक्चरिंग: टेक्सटाइल्स एंड जूट, 1919-1939।" *इंडियन इकॉनमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू*, 26(2), 145-190। DOI: 10.1177/001946468902600201
27. रे, राजत कांत. (1979). *इंडस्ट्रियलाइजेशन इन इंडिया: ग्रोथ एंड कॉन्फ्लिक्ट इन द प्राइवेट कॉर्पोरेट सेक्टर*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
28. जैन, एल. सी. (1929). *इंडिजेनस बैंकिंग इन इंडिया*. मैकमिलन एंड कंपनी।

29. सिन्हा, अनुग्रह नारायण. (1962). *बिहार केसरी: डॉ. श्री कृष्ण सिन्हा.* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।

30. गुप्ता, अमलेंदु. (1974). "इंपीरियलिज्म एंड द ब्रिटिश लेबर मूवमेंट, 1914-1964।" *केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस*। DOI: 10.1017/CBO9780511560311